B.A. Part I, हिन्दी रचना 8/5/2020

डॉ० चन्दा कुमारी, गेस्ट टीचर, रोहतास महिला महाविद्यालय

सासाराम, रोहतास

साँप कविता

साँप तुम सभ्य तो हुए नहीं
नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया।
एक बात पूछूं, दोगे उत्तर
फिर कहाँ सीखा डसना
यह विष कहाँ पाया ?

हिन्दी में प्रयोगवादी काव्यधारा के प्रवर्तक के रूप में अज्ञेय का महत्वपूर्ण स्थान है। कवि को अपनी अनुभूतियों को पाठक तक सम्प्रेषित करने कि समस्या का सदैव सामना करना पड़ता है। वह अपने अनुभूत सत्य को पाठक के मन में उतार देने के लिए निरन्तर साधन तलाशता रहता है। कवि के सामने सबसे बड़ा संकट यह होता है कि वह अपनी अनुभूति को यथावत एवं सटीक रूप में पाठक तक पहुंचाना चाहता है। काव्य भाषा अर्थ के साथ-साथ बिम्ब ग्रहण भी कराती है। यह सामान्य से कुछ अधिक अर्थ व्यक्त करती है अतः उनका शब्द शिल्प एवं भाषा सजगता निश्चित रूप से कुछ अलग है। नई कविता में समाजबोध का भी प्रखर स्वर है। यथार्थ का प्रश्न नया जीवन और समाज के यथार्थ को सही रूप में प्रस्तुत करना है उसे अपने लोगों की चिन्ता है।

प्रस्तुत पंक्तियों में में 'अज्ञेय' जी ने साँप कविता के माध्यम से उन्होंने आज के समाज का चित्र प्रस्तुत किया है वे कहते हैं कि